(II) असहभागी अवलोकन (Non-participant Observation)

अनियन्त्रित अवलोकन का दूसरा प्रमुख स्वरूप असहभागी अवलोकन है। यह वह प्रविधि है जिसमें अवलोकनकर्ता अध्ययन-समूह के जीवन में कोई भाग लिए बिना केवल एक तटस्थ अध्ययनकर्ता के रूप में ही घटनाओं का अवलोकन करता है। अवलोकनकर्ता न तो अध्ययन-समूह के बीच एक लम्बे समय तक रहता है और न ही उसके क्रिया-कलापों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करता है। साधारणतया वह समय-समय पर उपस्थित होकर एक अपरिचित और मौन दृष्टा के रूप में घटनाओं का सूक्ष्म रूप से अवलोकन करने का प्रयत्न करता है। इस रूप में असहभागी अवलोकन सहभागी अवलोकन की प्रकृति से पूर्णतया भिन्न होता है। असहभागी अवलोकन की सफलता के लिए यह आवश्यक होता है कि अवलोकन इस प्रकार किया जाय कि अध्ययनकर्ता की उपस्थिति से समूह के व्यक्ति या तो अनभिज्ञ रहें अथवा अपने व्यवहारों में कोई परिवर्तन न कर सकें। इसके लिए यह आवश्यक है कि किसी भी स्थिति में अध्ययनकर्ता स्वयं को एक विशिष्ट व्यक्ति समझकर विशेष आदर प्राप्त करने का प्रयत्न न करे बल्कि एक सामान्य व्यक्ति के रूप में घटनाओं का अवलोकन करे। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति को एक विशेष समूह के सांस्कृतिक आयोजनों का अवलोकन करना है तो यह आवश्यक है कि वह सामान्य व्यक्तियों के बीच बैठकर घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन

Scanned with CamScanner

करने का प्रयत्न करे। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि असहभागी अवलोकन अध्ययन की वह प्रविधि है जिसमें अवलोकनकर्ता किसी समूह के निकट सम्पर्क में न आकर एक अपरिचित और सामान्य व्यक्ति के रूप में ही घटनाओं का सूक्ष्म अवलोकन करने का प्रयत्न करता है।

असहभागी अवलोकन के गुण (Merits of Non-participant Observation)

अनेक प्रकार के सामाजिक अध्ययनों में असहभागी अवलोकन की विधि बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है—(1) सर्वप्रथम, असहभागी अवलोकन के द्वारा वस्तुनिष्ठ अध्ययन की सम्भावना बढ़ जाती है। अध्ययनकर्ता जब एक अपरिचित व्यक्ति के रूप में किसी समूह में घटित होने वाली घटनाओं का अध्ययन करता है तो उसका दृष्टिकोण अधिक तटस्थ और निष्पक्ष रहता है। समूह में उसकी उपस्थिति से व्यक्तियों के व्यवहारों में भी कोई परिवर्तन होने की सम्भावना नहीं रहती। (2) विश्वसनीय तथ्यों की प्राप्ति के लिए भी यह प्रविधि बहुत उपयोगी प्रमाणित हुई है। ऐसे तथ्य इसलिए भी अधिक प्रामाणिक होते हैं कि घटनाओं के घटित होने के साथ ही अध्ययनकर्ता द्वारा उनका आलेखन कर लिया जाता है। (3) असहभागी अवलोकन के द्वारा अध्ययनकर्ता को समूह का अधिक सहयोग मिलने की सम्भावना रहती है। इसका कारण यह है कि अवलोकनकर्ता की जाति, धर्म अथवा विचार अध्ययन-समूह के व्यक्तियों द्वारा अपने लिए बाधक नहीं समझे जाते। (4) असहभागी अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययनकर्ता सामान्य ढंग से अवलोकन-कार्य करता है, अत: ऐसे अवलोकन में धन और समय की काफी बचत हो जाती है। (5) यह विश्वास किया जाता है कि असहभागी अवलोकन की वह विधि है जिसके द्वारा विस्तृत रूप से सामग्री का संकलन किया जा सकता है। ऐसे अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययनकर्ता साधारण-से-साधारण तथ्यों को भी एकत्रित करने का प्रयत्न करता है जो बाद में कभी-कभी बहुत उपयोगी निष्कर्ष देने में सहायक होते हैं।

असहभागी अवलोकन के दोष (Demerits of Non-participant Observation)

असहभागी अवलोकन की अपनी कुछ सीमाएँ हैं। (1) सर्वप्रथम, इस बात की सम्भावना नहीं की जा सकती कि कोई भी अवलोकनकर्ता पूर्णतया असहभागी रूप से किसी समूह के जीवन को समझ सकता है। **गुडे तथा हाट** का भी यही विचार है कि "विशुद्ध असहभागी अवलोकन हो सकना अत्यधिक कठिन है।"[1] इसका तात्पर्य यह है कि अवलोकन के दौरान अध्ययनकर्ता को कुछ-न-कुछ सीमा तक समूह के निकट-सम्पर्क में अवश्य आना पड़ता है। (2) अनेक अध्ययन-विषय इस प्रकार के होते हैं जिन्हें पूर्णतया असहभागी अवलोकन की सहायता से नहीं समझा जा सकता, कुछ अत्यधिक गुप्त और महत्वपूर्ण सूचनाओं के लिए समूह का सहभागी बनना भी आवश्यक होता है। (3) असहभागी अवलोकन के कारण कभी-कभी ऐसी घटनाओं का अध्ययन छूट जाता है जो आकस्मिक रूप से अथवा कभी-कभी घटित होती हैं लेकिन अध्ययन की प्रामाणिकता के लिए उनका विशेष महत्व होता है। (4) कोई अवलोकनकर्ता जब असहभागी ढंग से समूह का अध्ययन करता है तो अवलोकनकर्ता की उपस्थिति में समूह के लोग बनावटी ढंग से व्यवहार करने लगते हैं। इसके फलस्वरूप अध्ययन अस्वाभाविक और दोषपूर्ण हो जाता है। (5) असहभागी अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययनकर्ता का दृष्टिकोण भी वस्तुनिष्ठ अध्ययन में बाधक होता है। इसके अन्तर्गत अवलोकनकर्ता अक्सर घटनाओं को अपने दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न करता है, समूह के सदस्यों के दृष्टिकोण से नहीं। साथ ही कभी-कभी कुछ विशेष तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए वह अपने विचारों और दृष्टिकोण का भी समावेश कर लेता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि असहभागी अवलोकन की विधि भी दोषरहित नहीं है। इसके समुचित प्रयोग के लिए अध्ययनकर्ता का दृष्टिकोण बहुत अधिक वस्तुनिष्ठ होना आवश्यक है।

सहभागी तथा असहभागी अवलोकन में अन्तर (Difference between Participant and Non-participant Observation)

सहभागी तथा असहभागी अवलोकन की उपर्युक्त प्रकृति को देखने से स्पष्ट होता है कि इनकी कार्य-विधि एक-दूसरे से काफी भिन्न है। विभिन्न आधारों पर अनियन्त्रित अवलोकन की इन दोनों विधियों के बीच पाये जाने वाले प्रमुख अन्तरों को अग्रांकित रूप से समझा जा सकता है—

1 Goode and Hatt, *op. cit.*, p. 123.

Scanned with CamScanner

(1) सर्वप्रथम, **सहभागिता की प्रकृति के आधार पर** ये दोनों विधियाँ एक-दूसरे से भिन्न हैं। सहभागी अवलोकन में अनुसन्धानकर्ता अध्ययन-समूह का अभिन्न अंग बनकर घटनाओं का अध्ययन करता है, जबकि असहभागी अवलोकन के अन्तर्गत उसकी भूमिका एक अपरिचित और तटस्थ दृष्टा के रूप में होती है।

(2) **अध्ययन की गहनता के आधार पर** भी इनमें एक स्पष्ट अन्तर है। सहभागी अवलोकन के द्वारा समूह के व्यवहारों तथा सम्बन्धित घटनाओं का सूक्ष्म-से-सूक्ष्म और अत्यधिक गहन अध्ययन करना भी सम्भव हो जाता है, जबकि असहभागी अवलोकन के द्वारा केवल कुछ स्पष्ट और मूर्त तथ्यों का ही संग्रह किया जा सकता है। गुप्त सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए असहभागी अवलोकन की अपेक्षा सहभागी अवलोकन को ही अधिक उपयुक्त माना जाता है।

(3) **समूह के व्यवहार के आधार** पर सहभागी अवलोकन असहभागी अवलोकन की तुलना में अधिक उपयुक्त होता है। सहभागी अवलोकन के द्वारा घटनाओं को उनके स्वाभाविक रूप में देखना सम्भव होता है, जबकि असहभागी अवलोकन की स्थिति में समूह के लोग अक्सर अपने व्यवहारों में परिवर्तन उत्पन्न कर लेते हैं। इसके फलस्वरूप अध्ययन की वैज्ञानिकता अक्सर सन्देहपूर्ण बन जाती है।

(4) **समय और व्यय के आधार पर** सहभागी अवलोकन की तुलना में असहभागी अवलोकन को अधिक उपयुक्त माना जाता है। इसका कारण यह है कि असहभागी अवलोकन के अन्तर्गत समय और साधनों का नियोजन अधिक कुशलतापूर्वक किया जा सकता है।

(5) **वस्तुनिष्ठता की सीमा के आधार पर** भी सहभागी और असहभागी अवलोकन की प्रकृति एक-दूसरे से भिन्न है। सहभागी अवलोकन के अन्तर्गत ऐसा कोई प्रमाप (Measurement) नहीं है जिसके आधार पर अध्ययन की वस्तुनिष्ठता को प्रमाणित किया जा सके। दूसरी ओर, असहभागी अवलोकन के द्वारा न केवल प्रत्येक तथ्य को महत्वपूर्ण मानकर उसका संग्रह किया जाता है बल्कि कोई भी दूसरा अवलोकनकर्ता घटनाओं का स्वयं भी अवलोकन करके उनकी प्रामाणिकता को समझ सकता है। इसके फलस्वरूप असहभागी अवलोकन अक्सर अधिक वस्तुनिष्ठ बन जाता है।

(6) सूचनाओं की **सत्यापनशीलता के आधार पर** भी ये दोनों विधियाँ एक-दूसरे से भिन्न हैं। सहभागी अवलोकन के द्वारा स्वयं अवलोकनकर्ता भी अपने द्वारा एकत्रित तथ्यों की पुनर्परीक्षा नहीं कर सकता। इसके विपरीत, असहभागी अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययन के प्रत्येक स्तर पर घटनाओं का पुनर्परीक्षण करना सम्भव होता है। इसका कारण यह है कि यह सहभागी अवलोकन के विपरीत है। असहभागी अवलोकन में साधारणतया उन्हीं तथ्यों का अवलोकन किया जाता है जो या तो समूह में विद्यमान प्रतिनिधि तथ्य होते हैं अथवा जो घटनाएँ लगभग एक निश्चित क्रम से घटित होती रहती हैं। स्वाभाविक है कि ऐसे तथ्यों अथवा घटनाओं का सत्यापन किसी भी समय पुनः किया जा सकता है।

(7) **अध्ययन प्रविधियों के आधार पर** भी सहभागी और असहभागी अवलोकन की प्रकृति में काफी भिन्नता है। सहभागी अवलोकन के अन्तर्गत अवलोकनकर्ता किसी भी दशा में अपने वास्तविक परिचय को छिपाए रखने का प्रयत्न करता है। इसके फलस्वरूप वह न तो अनुसूची का प्रयोग कर सकता है और न ही साक्षात्कार प्रविधि के द्वारा व्यवस्थित रूप से तथ्यों का संग्रह कर सकता है। अधिक-से-अधिक वह अवलोकन कार्ड (Observation Cards) को ही उपयोग में ला सकता है और वह भी छिपे तौर पर। इसके विपरीत, असहभागी अवलोकन के अन्तर्गत उन सभी वैज्ञानिक प्रविधियों तथा उपकरणों का प्रयोग करना सम्भव है जो किसी भी अवलोकन को अधिक उपयोगी बना सकते हैं।

(8) अन्त में, **अवलोकनकर्ता की कुशलता के आधार पर** भी इन दोनों प्रविधियों में स्पष्ट भेद किया जा सकता है। सहभागी अवलोकन केवल तभी सफल हो सकता है जब अवलोकनकर्ता बहुत अधिक व्यवहारकुशल तथा प्रशिक्षित हो। अपनी तनिक-सी गलती से वह समूह के आक्रोश का शिकार बन सकता है। दूसरी ओर, असहभागी अवलोकन का कार्य सामान्य कुशलता और प्रशिक्षण से भी किया जा सकता है। यही कारण है कि सहभागी अवलोकन की जब तक बहुत अधिक आवश्यकता नहीं होती, तब तक सामाजिक घटनाओं से सम्बन्धित प्राथमिक सामग्री का संकलन करने के लिए असहभागी अवलोकन की विधि को ही अधिक उपयुक्त समझा जाता है।

Scanned with CamScanner

(III) अर्द्ध-सहभागी अवलोकन (Quasi-participant Observation)

अनियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत अर्द्ध-सहभागी अवलोकन तीसरा प्रमुख स्वरूप है जिसे आज सामाजिक घटनाओं के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण विधि के रूप में देखा जाता है। उपर्युक्त विवेचन में सहभागी तथा असहभागी अवलोकन की सीमाओं को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी अध्ययन में अवलोकनकर्ता का पूर्णतया सहभागी अथवा असहभागी हो सकना अत्यधिक कठिन है। पूर्ण सहभागी अवलोकन के फलस्वरूप अध्ययन की वस्तुनिष्ठता समाप्त हो जाने का डर रहता है, जबकि असहभागी अवलोकन के कारण अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों के अध्ययन छूट जाने की सम्भावना बनी रहती है। इस स्थिति में अवलोकन को वैज्ञानिक बनाने के लिए एक ऐसी विधि की आवश्यकता महसूस की जाती रही है जिसके अन्तर्गत अध्ययन को आंशिक रूप से सहभागी और आंशिक रूप से असहभागी अवलोकन के द्वारा पूरा किया जा सके। संक्षेप में, अवलोकन की इसी विधि को हम अर्द्ध-सहभागी अवलोकन कहते हैं। **अर्द्ध-सहभागी अवलोकन एक मिश्रित विधि है जिसमें सहभागी-असहभागी अवलोकन का समन्वित रूप विद्यमान होता है।** इसके अन्तर्गत अवलोकनकर्ता अध्ययन-समूह के लिए पूर्णतया अपरिचित नहीं होता। वह समूह के अनेक व्यक्तियों में बार-बार मिलकर एक ओर उनसे अपना सम्पर्क बढ़ाने का प्रयत्न करता है तो दूसरी ओर उनसे अपने परिचय को छिपाए बिना महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता है। अवलोकनकर्ता का प्रमुख कार्य अध्ययन-समूह के लोगों का विश्वास इस प्रकार प्राप्त करना होता है जिससे वे अध्ययन को अपने लिए उपयोगी समझकर अवलोकनकर्ता के कार्य में बाधक न बनें।

गुडे तथा **हाट** का विचार है कि अनियन्त्रित अवलोकन की इन तीनों प्रविधियों में अर्द्ध-सहभागी अवलोकन सबसे अधिक उपयुक्त है। इसका कारण यह है कि अर्द्ध-सहभागी अवलोकन में सहभागी तथा असहभागी दोनों प्रकार के अवलोकनों का मिश्रण होने के कारण इनके दोषों को काफी सीमा तक दूर किया जा सकता है। इसी प्रकार **विलियम ह्वाइटे** (W. F. Whyte) ने भी यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक तथ्यों की जटिलता के कारण किसी समूह का पूर्ण सहभागी होकर अध्ययन करना एक बहुत अव्यावहारिक दृष्टिकोण है। किसी एक समूह का सहभागी बन जाने से अध्ययनकर्ता का अन्य समूहों से सम्बन्ध टूट जाता है। वास्तविकता यह है कि अर्द्ध-सहभागी अवलोकन के द्वारा ही उन तथ्यों की वास्तविक जानकारी करना अधिक सम्भव है जिनका सम्बध एक समूह के सांस्कृतिक जीवन अथवा विशिष्ट व्यवहारों से होता है। उदाहरण के लिए, धार्मिक संगठनों की कार्यविधि, समूह में पाये जाने वाले धार्मिक और जादुई व्यवहारों, उत्सवों के आयोजन, लोक जीवन के विभिन्न पक्षों तथा परम्परागत संस्थाओं के स्वरूप आदि का अध्ययन करने के लिए अर्द्ध-सहभागी अवलोकन ही सबसे अधिक उपयुक्त है। इसी आधार पर यह कहा जाता है कि अनियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत अर्द्ध-सहभागी अवलोकन सबसे अधिक उपयोगी विधि है।

अनियन्त्रित अवलोकन के गुण (Merits of Uncontrolled Observation)

समाज विज्ञानों के क्षेत्र में यह तथ्य आज भी विवाद का विषय है कि क्या सामाजिक घटनाओं को अनियन्त्रित करके उनका अध्ययन किया जा सकता है ? यदि यह मान लिया जाय कि सामाजिक घटनाओं को नियन्त्रित करके अध्ययन किया जा सकता है तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसे अध्ययनों से अनेक ऐसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं जो अध्ययन की उपयोगिता की तुलना में कहीं अधिक हानिकारक होंगी। इसका तात्पर्य यह है कि न तो सामाजिक घटनाओं पर पूर्ण नियन्त्रण रखना सम्भव है और न ही नियन्त्रित अध्ययन के द्वारा मानव व्यवहारों का स्वाभाविक रूप में अध्ययन किया जा सकता है। इस स्थिति में अनियन्त्रित अवलोकन ही सामाजिक घटनाओं के अध्ययन की एक उपयोगी विधि हो सकती है। इस सम्बन्ध में **गुडे** तथा **हाट** का कथन है कि "आज सामाजिक घटनाओं के विषय में भी ज्ञान उपलब्ध है, उसका अधिकांश भाग अनियन्त्रित अवलोकन के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।"

पी. वी. यंग ने अनियन्त्रित अवलोकन के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "ध्यानपूर्वक किये गये अवलोकन में अधिक यथार्थता होती है तथा इनमें घटनाओं को भली प्रकार देख सकने की क्षमता का समावेश होता है।"[1] अनेक दूसरे क्षेत्रों में भी अनियन्त्रित अवलोकन के गुणों को सरलतापूर्वक

1 "Careful observation involves more than accurate and attentive notice of situations."
—P. V. Young, *op. cit.*, p. 159.

Scanned with CamScanner

समझा जा सकता है। सर्वप्रथम, अनियन्त्रित अवलोकन की सहायता से अध्ययनकर्ता की घटनाओं को उनके वास्तविक रूप में देखने का अवसर नहीं होता बल्कि वह स्वाभाविक रूप से घटनाओं को देख सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि अनियन्त्रित अवलोकन अधिक सरल और स्वाभाविक होता है। दूसरे, ऐसा अवलोकन इस दृष्टिकोण से अधिक वस्तुनिष्ठ होता है कि अध्ययनकर्ता के व्यवहारों अथवा अध्ययन की जाने वाली दशाओं पर किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं होता। तीसरे, परिवर्तनशील सामाजिक दशाओं का अध्ययन करना इसी विधि के द्वारा सबसे अधिक उपयुक्त रहता है।

अनियन्त्रित अवलोकन के दोष (Demerits of Uncontrolled Observation)

अनियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययनकर्ता को विषय का स्वतन्त्र रूप से अध्ययन करने की काफी छूट मिल जाती है, इसलिए ऐसा अध्ययन बहुधा वस्तुनिष्ठ नहीं रह जाता। **प्रो. बर्नार्ड** ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "विभिन्न तथ्य इतने सजीव होते हैं तथा उनके बारे में हमारी भावनाएँ इतनी दृढ़ होती हैं कि हम अपनी कल्पना-शक्ति को ही ज्ञान का आधार समझ लेने की गलती कर बैठते हैं।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि (1) अनियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययनकर्ता तथ्यों को अक्सर उनके वास्तविक रूप में नहीं देखता। इस प्रकार उसकी व्यक्तिगत गलती से सम्पूर्ण अध्ययन त्रुटिपूर्ण बन जाने की सम्भावना हो जाती है। (2) ऐसे अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययनकर्ता कभी-कभी ऐसी सामग्री का भी संकलन कर लेता है जो या तो अध्ययन से सम्बन्धित नहीं होती अथवा अध्ययन के लिए अनुपयुक्त होती हैं। (3) साधारणतया अनियन्त्रित अवलोकन में अधिकांश सूचनाएँ अवलोकन-कार्य समाप्त होने के बाद लिखी जाती हैं। इसके फलस्वरूप तथ्यों का आलेखन कभी-कभी दोषपूर्ण हो जाता है। (4) अनियन्त्रित अवलोकन के अन्तर्गत अध्ययन-समूह के व्यवहारों पर भी कोई नियन्त्रण न होने के कारण उत्तरदाता एक छोटे-से तथ्य को घुमा-फिराकर तथा अक्सर अनर्गल रूप से प्रस्तुत करता है। अध्ययनकर्ता में यदि धैर्य की थोड़ी भी कमी होती है तो वह उत्तरदाताओं से वास्तविक और उपयोगी तथ्यों को जानने से वंचित रह जाता है। वास्तव में, अनियन्त्रित अवलोकन के दोष स्वयं इस विधि से उतने सम्बन्धित नहीं हैं जितना कि अवलोकनकर्ता के व्यक्तिगत दोषों से। इस दृष्टिकोण से, अवलोकनकर्ता में पर्याप्त कुशलता, अनुभव और प्रशिक्षण होने से ही अनियन्त्रित अवलोकन का उपयोग सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner